भालू ने खेली फुटबाल

अभ्यास प्रथम दिन

जाड़े की ऋतु थी। सुबह का वक्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। शेर का एक बच्चा

सिमटकर गोलमटोल बना जामुन के वृक्ष के नीचे सोया हुआ था। इधर भालू साहब सैर

पर निकले। तभी उनकी नजर जामुन के वृक्ष के नीचे पड़ी। आंखें फैलाई, अक्ल दौड़ाई–

अहा, फुटबाल। सोचा चलो इससे खेलकर सर्दी की ऋतु में कुछ गर्मी हासिल की जाए।

आव देखा न ताव, भालू जी ने शेर के बच्चे को पैर से उछाल दिया। हड़बडी में शेर का

बच्चा दहाड़ा । उसने वृक्ष की डाल पकड़नी चाही । मगर वह डाल पकड़ नहीं पाया।

भालू साहब जल्दी ही मामला समझ गए। वे पछताए । अगले ही क्षण दौडकर उन्होंने

अपने दोनों हाथ बढ़ाए । शेर के बच्चे को लपक लिया। मुझे और उछालो।

अभ्यास द्वितीय दिन

अरे यह क्या । शेर का बच्चा फिर से उछालने के लिए कह रहा है। एक बार फिर भालू

दादा ने उछाला। दो बार, तीन बार। फिर क्या था बार–बार यही होने लगा। शेर के बच्चे

को उछलने में मजा आ रहा था, परंतु भालू थककर परेशान हो गया था। ओह किस

आफत में आ फंसा। इस बार उछालते ही भालू ने घर की ओर दौड़ लगायी और गायब

हो गया। इधर शेर का बच्चा धड़ाम से जमीन पर आ गया और डाल भी टूट गई। तभी

माली वहां आ गया वह शेर के बच्चे पर बरस पड़ा। तुमने पेड़ की डाल तोड़ दी।

हरजाना लाओ। शेर के बच्चे ने कहा। क्षमा करों। जरा ठीक तो हो लूं। माली ने कहा

ठीक है। तुम यही ठहरो। मैं दूसरे पेड़ देखकर अभी आता हूं। माली के वहां से जाते ही

शेर का बच्चा नो दो ग्यारह हो गया। उसने सोचा कि जान बची तो लाखो पाए।

हाथी और भंवरे की कहानी

अभ्यास तृतीय दिन

एक बार कुछ भँवरे रस पीने के लिए कमल के फूलों वाले तालाब पर आए। उनमें से एक भँवरा बड़ा लालची था। उसके सारे मित्र रस पीकर चले गए, लेकिन भँवरा वहीं रह गया। वह रस पीने में मस्त था। रात हो गई। कमल की पंखुड़ियाँ बन्द होने लगी। इससे बेखबर बेचारा भँवरा सो गया। जब उसने आँखें खोली। अरे! हर तरफ गहरा अँधेरा हो चुका है। वह दुखी हो गया। अब तो कमल तभी खुलेगा, जब सूरज निकलेगा। तब तक मुझे इसमें बन्द रहना होगा। इतने में हाथियो का झुंड उधर आया। वे सब तालाब में नहाने और खेलने लगे। तभी एक हाथी ने कमल का फूल तोड़ा। हाथी ने फूल को तालाब से बाहर फेंक दिया। बेचारा भँवरा उसी फूल के अन्दर बन्द था। मैं बाहर कैसे निकलूँगा। कौन मेरी रक्षा करेगा। नहाने के बाद हाथियो का झुंड लौट गया। पर वहीं रूका रहा एक नन्हा हाथी। उसे घास मे रोने की आवाज सुनाई दी। उसने देखा कि वहाँ कमल का एक फूल पड़ा है। रोने की आवाज उसी में से आ रही थी। नन्हें हाथी ने अपनी सूँड से कमल का फूल खोल दिया। भँवरा झट से बाहर कूदा। उसके प्राणों की

रक्षा हो गई। "हलो, नन्हें भँवरे! " हाथी बोला। "हलो, नन्हें हाथी!" भँवरा बोला। दोनों

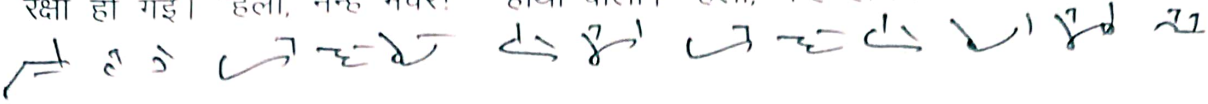

खुश हो गए। दोनों पक्के मित्र बन गए।

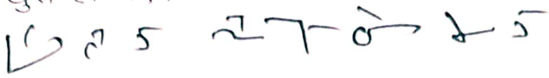

खिचडी

अभ्यास चौथे दिन

एक बार बिरजू अपने ससुराल गया। बिरजू की सासू माँ ने उसे दाल और चावल से बनी एक चीज खिलाई। बिरजू को उसका स्वाद बहुत अच्छा लगा। उसने पूछा, ''इसका नाम क्या है ?'' सासू बोली ''खिचड़ी।'' बिरजू ने सोचा, ''घर जाकर मैं भी खिचड़ी ही खाऊँगा'' लेकिन कहीं नाम न भूल जाए, इसलिए वह खिचड़ी–खिचड़ी बोलता हुआ घर की तरफ चल दिया। चलते–चलते बिरजू का पैर एक गड्ढ़ें में पड़ गया और उसे झटका लगा। झटके से हड़बड़ाकर बिरजू खिचड़ी के बदले ''खाचिड़ी'' बोलनें लगा। अब वह ''खाचिड़ी–खाचिड़ी'' बोलता हुआ जा रहा था। रास्ते में एक किसान अपने खेत में मक्के के बीज बो रहा था। उसे ''खाचिड़ी–खाचिड़ी'' सुनकर बड़ा गुस्सा आया। किसान बोला ''मैं तो खेत में बीज बो रहा हूँ और यह कहता है 'खाचिड़ी'। ठहर जा ! अभी बताता हूँ'' और वह बिरजू के पीछे दौड़ा। बिरजू घबराकर बोला, ''फिर मैं क्या बोलूँ?'' किसान बोला, ''बोल उड़ चिड़ी।'' बिरजू ''उड़चिड़ी–उड़चिड़ी'' बोलता हुआ चलने लगा।

अभ्यास पांचवें दिन

आगे रास्ते में एक बहेलिए ने चिड़ियों को पकड़ने के लिए जाल बिछा रखा था। उसे''उड चिड़ी'' सुनकर बड़ा गुस्सा आया। बहेलिया गुस्से में बोला, मैं तो चिड़ियों को पकड़ रहा हूँ और यह कहता है उड़ चिड़ी। ठहर जा, अभी बताता हूँ। वह भी बिरजू के पीछे दौड़ा। बिरजू घबराकर बोला, ''फिर मैं क्या बोलू?'' बहेलिया बोला, ''बोल बैठ चिड़ी।'' अब बिरजू ''बैठचिड़ी–बैठचिड़ी'' बोलता हुआ जा रहा था। चलते–चलते उसे भूख लगने लगी। बिरजू एक होटल में गया और बोला, ''मैं बैठचिड़ी खाऊँगा।'' होटल में किसी को समझ नहीं आया कि बिरजू क्या माँग रहा है। मगर बिरजू ''बैठचिड़ी–बैठचिड़ी'' की रट लगाए था। होटल वालो को गुस्सा आ गया। उन्होनें बिरजू की जमकर पिटाई कर दी। इतने में बिरजू की माँ वहाँ आ पहुँची। माँ बोली, ''अरे तुमनें तो पीट–पीटकर मेरे बेटे की खिचडी ही बना दी।'' ''खिचड़ी'' सुनकर बिरजू खुश हो गया। बोला, 'हाँ–हाँ, मैं खिचड़ी ही तो खाना चाहता हूँ।''

बगीचे का घोंघा

अभ्यास छठे दिन

बहुत समय पहले की बात है। एक बगीचे में एक घोंघा रहता था। जानते हो घोंघा कैसा होता है? बगीचा बहुत छोटा और सुन्दर था। घोंघे ने अपनी सारी जिन्दगी उसी बगीचे में बिताई। वह धीमे–धीमे चलता था, उसे बगीचे के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचने में पूरे दो दिन लगते थे। बहुत समय तक वहाँ रहने की वजह से घोंघा बगीचे का कोना–कोना पहचान गया था। पर कभी–कभी घोंघे को लगता, इस बगीचे के बाहर क्या होगा? कैसी होती होगी दुनिया? बगीचे की दीवार में एक छेद था। घोंघा रोज उस छेद को देखता। उसे याद आता कि उसकी माँ उससे कहा करती थी, "अगर तुमने ज्यादा बदमाशी की तो मैं तुम्हें इस छेद से बाहर की दुनिया में भेज दूँगी।" घोंघा कुछ और दिन सोचता रहा। फिर उसने अपना सामान अपने शंख में बाँध लिया। अगले दिन सूरज निकलने के पहले ही घोंघा निकल पड़ा। घोंघा छेद में घुसा और जल्दी ही बाहर निकल आया। बाहर आते ही घोंघा चकित रह गया। जितनी दूर तक उसकी आँखे देख सकती

थी, उसके सामने लम्बा–चौडा मैदान था। वास्तव मे वह बच्चों के खेलने की जगह थी। पर घोंघे ने तो सोचा ही नहीं था कि इतनी बड़ी जगह भी हो सकती है। ''वाह ! दुनिया सचमुच कितनी बड़ी है,'' घोंघे ने कहा। उसी समय खड़–खड़ की आवाज आई। घोंघे को लगा कि पूरा आकाश ढक गया है। वह डर के मारे जोर से चिल्लाया, उई! फिर वह अपने ऊपर हँसने लगा। उसने देखा कि एक सूखा पत्ता उसके ऊपर आ गिरा था। ''वाह, दुनिया तो कितनी मजेदार जगह है'' घोंघे ने कहा।

अभ्यास सातवें दिन

उसी समय खड़–खड़ की आवाज आई। घोंघे को लगा कि पूरा आकाश ढक गया है। वह डर के मारे जोर से चिल्लाया उई। फिर वह अपने उपर हंसने लगा। उसने देखा कि एक सूखा पत्ता उसके उपर आ गिरा था। वाह, दुनिया तो कितनी मजेदार जगह है, घोंघे ने कहा। वह उस सूखी भूरी पत्ती के नीचे से बाहर निकल गया। थोड़ा आगे एक बड़ा–सा पत्थर पड़ा हुआ था। घोंघे को लगा यह जरूर कोई पहाड़ होगा। वह झट से उस पर चढ़ गया और दुनिया के नजारे देखने लगा। घोंघे ने अपनी जिन्दगी में पहली बार लाल चींटो को देखा। वे लम्बे–पतले पॉवों से तेजी से इधर–उधर आ–जा रहे थे। उसने देखा कि एक गिलहरी फुदक–फुदककर तेजी से एक पेड़ पर चढ़ गई। एक गेंद लुढ़कती हुई जा रही है और एक कुत्ता तेजी से उसके पीछे भाग रहा है। ''वाह, दुनिया में सब कुछ कितने तेजी से चलता है'' घोंघे ने कहा। ''बगीचे में तो सब कुछ धीरे–धीरे चलता था, मेरी तरह।''तभी अचानक उसने एक ऐसी चीज देखी जिससे उसका सिर चकरा गया। अभी तक तो घोंघे ने पौधे या छोटे पेड़ ही देखे थे। पर यहाँ पर तो एक ऐसा लंबा पेड़ था जो पूरे आसमान तक जाता था। बेचारे घोंघे ने कभी खजूर का पेड़ नहीं देखा था।

वहाँ एक और पेड़ था जो इतना बड़ा था कि घोंघा उसके एक छोर से दूसरे छोर तक भी नहीं देख पाता था। बड़ के पेड़ से जो उसका पाला पड़ गया था, इसलिए। घोंघे की आँखें आश्चर्य से और भी खुल गई। फिर थोड़ी और, और भी चौड़ी हो गई। ''वाह, सचमुच दुनिया कितनी अद्भुत जगह है।'' घोंघे ने तय कर लिया कि अब तो वह इस दुनिया में ही रहेगा।

खीरा खाऊँ कचर–कचर

अभ्यास आठवें दिन

भाजी का बडा खेत था। खेत में खूब बेलें थी। कद्दू थे। ककड़ियाँ थीं। खीरे तो बहुत ही थे। वहाँ उड़ता आया एक कौआ। उसने सोचा, ''अहा, कितने अच्छे हैं ये खीरे। चलो खाऊँ में इनको कचर–कचर।'' कौआ गया बेल के पास। जैसे ही उसने खीरे में चोंच मारी। बेल बोली–''ठहर जा भाई। तेरी चोंच तो गंदी है। पहले पानी से अच्छी तरह धो ले। फिर खाना कचर–कचर।'' कौआ गया बावड़ी के पास। बावड़ी दीदी, बावड़ी दीदी। आँगन में आया है कौआ भाई। दे थोड़ा पानी, धो लूँ जरा चोंच, खीरा खाऊँगा कचर–कचर। बावड़ी बोली– ले भाई पानी, पर तू लेगा किसमें? एक मटका ले आ, फिर चाहे जितना पानी भर लेना। कौआ उड़ता–उड़ता गया कुम्हार के पास। बोला– ''कुम्हार महाराज, कुम्हार महाराज! आँगन में आया है कौआ भाई। दे जरा मटका। निकालूँ थोड़ा पानी। धो लूँ अपनी चोंच। खीरा खाना है कचर–कचर।'' कुम्हार बोला– ''मिट्टी ला। अभी बना देता हूँ मटका।''

कौआ उड़ता–उड़ता गया खेत के पास। बोला– ''खेत, खेत महाराज! ऑगन में आया

कौआ भाई। दे दो मिट्‌टी। मैं दूँगा कुम्हार को। लूँगा मटका। निकालूँगा पानी। धोऊँगा

चोंच। खाऊँगा खीरा कचर–कचर।'' खेत बोला– ''ले आ हिरण को। फिर चाहे जितनी

मिट्‌टी खोद लेना।'' कौआ उड़ता– उड़ता गया हिरण के पास। बोला, ''ऑगन में आया है

कौआ भाई। चलो मेरे संग, लूँगा मिट्‌टी। दूँगा कुम्हार को। लूँगा मटका। निकालूँगा

पानी। धोऊँगा चोंच। मुझे खाना है खीरा कचर–कचर।'' हिरण बोला– चलो। कौआ और

हिरण गए खेत के पास। मिट्‌टी खोदी और ले गया कुम्हार के पास। कुम्हार से उसने

मटका लिया और गया बावड़ी के पास। उसने बावड़ी से पानी निकाला और धो डाली

चोंच। फिर गया बेल के पास। बेल ने दिए बहुत सारे खीरे। कौए ने खाए कचर–कचर।

दादी की रोटी

अभ्यास नौवें दिन

एक बार एक दादी ने एक रोटी बनाई और उसे पीतल की थाली में रखा। एक कौआ

आया और उसे लेकर उड़ गया, फिर पेड़ पर अपने घोंसले में जा बैठा। दादी बोली,

''कौए, ओ कौए, मेरी रोटी वापस कर दे।''

कौए ने उत्तर दिया, ''क्यों दूँ? मैं तो इसे खाऊँगा।''

दादी पेड़ के पास गई और उससे बोली, ''ओ पेड़, ओ पेड़, मैं बहुत भूखी हूँ और कौआ

मेरी रोटी ले गया है। तुम उसका घोंसला नीचे गिरा दो, तो मैं अपनी रोटी उससे वापस

ले लूँ।'' पेड़ मोटी आवाज में बोला, ''नहीं, दादी! कौआ तो मेरा दोस्त है। मैं

क्यूँ उसका घोंसला नीचे गिराऊँ?'' दादी लकड़हारे के पास पहुँची। ''आ लकड़हारे, कौआ

मेरी रोटी ले गया है। पेड़ उसका घोंसला नीचे नहीं गिराता, इसलिए तुम पेड़ को काट

डालो।'' लकड़हारे ने धीरे से पूछा, ''मैं क्यों काटूँ पेड़? उसने तो मेरा कोई नुकसान नहीं

किया है।'' दादी गुस्सा हो गई और चूहे के पास पहुँची। ''ओ चूहे, ओ चूहे, तुम मेरे दोस्त

बन जाओ। कौआ मेरी रोटी ले गया है, पेड उसका घोंसला नीचे नहीं फेंकता। लकड़हारा पेड़ नहीं काटता है। तुम उसकी कुल्हाड़ी की मूठ काट दो।'' चूहे ने कुछ देर सोचा फिर बोला, ''लकड़हारे ने तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा है। मैं क्यों काटूं उसकी कुल्हाडी की मूठ?''

अभ्यास दसवें दिन

दादी चलती–चलती बिल्ली के पास पहुँची। ''ओ बिल्ली, कौआ मेरी रोटी ले गया है। पेड़ उसका घोंसला नीचे नहीं गिराता, लकड़हारा पेड़ नहीं काटता, चूहा लकड़हारे की कुल्हाड़ी की मूठ नहीं काटता। मेरी बिल्ली, तुम चूहे को मार डालो।'' बिल्ली बोली, ''दादी, तुम्हारी शिकायत ठीक होगी, पर चूहे ने तो मुझे कभी तंग नहीं किया। मैं क्यों उसे मारूँ?'' दादी थककर अपने कुत्ते के पास गई। उसने उसे प्यार से थपथपाया और कहा, ''मेरे कुत्ते, मेरे दोस्त, क्या तुम भी बिल्ली को नहीं मारोगे?'' कुत्ते ने अपनी दुम हिलाई और कहा,''क्यों नहीं! जरूर मारूँगा।'' कुत्ता बिल्ली के पीछे भागा। बिल्ली चिल्लाई, ''मुझे छोड़ दो भाई।'' वह चूहे के पीछे भागी। चूहा चिल्लाया, ''बिल्ली, बिल्ली, मुझे मत मारो, मैं अभी जाकर लकड़हारे की कुल्हाड़ी की मूठ काटता हूँ।'' लकड़हारे ने देखा कि चूहा आ रहा है। उसने विनती की, ''भाई मेरी कुल्हाड़ी की मूठ मत काटो। मैं अभी जाकर पेड़ काटता हूँ।'' उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और पेड़ काटने चल दिया। पेड़ बोला, ''लकड़हारे भाई, मुझे मत काटो, मैं अभी कौए का घोंसला नीचे गिराता हूँ।'' पेड़ ने अपनी

डाल हिलाई, डाल ने घोंसला हिलाया, कौआ डर गया और उसने झट से रोटी नीचे फेंक

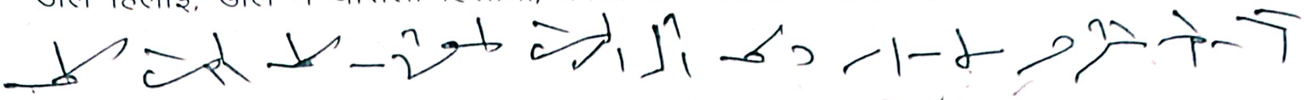

दी। दादी को रोटी मिल गई और वह खुशी–खुशी अपने घर चली गई।

सूरज का रूमाल

अभ्यास ग्यारहवें दिन

एक बार सूरज को जुकाम हो गया। हुआ यूँ कि एक दिन बारिश हो रही थी और सूरज बिना गमबूट पहने ही बाहर निकल पड़ा। पानी भरे गड्ढों में वह छप–छप करता चलता गया जिससे उसके पैर काफी भीग गए। वापस लौट आने के बजाय वह आगे बढ़ता ही गया। थोड़ी ही देर में उसके कपड़े भी भीग गए और फिर भी वह नहीं लौटा। वह तो आगे–ही–आगे झरनों और पहाड़ियों पर से उछलता–कूदता हरे–भरे मैदानों को पार करता चला गया। धरती ने उसे गरम पानी की बोतल दी और रजाई ओढ़ाकर बिस्तर में सुला दिया। इसका कोई फायदा नहीं हुआ। वह सपने में भी छींकता ही रहा। जब इन सबसे भी आराम नहीं आया तो धरती ने अपनी बहन फूलरानी को बुलाया। फूलरानी ने गुलाब, सूरजमुखी के फूल, बटन फूल, नीले घंटी फूल और तरह–तरह के फूलों की मुस्कान ली। उसमें तुलसी और जड़ी–बूटी मिलाकर दवा बनाई। दवा सूरज को गरम–गरम पिला दी।

अभ्यास बारहवें दिन

फूलरानी ने सूरज के लिए एक रूमाल बनाया। उसमें फूलरानी ने नींद में सिर डुलाते बैंगनी रंग के बनफशा के फूलो की सुन्दरता डाली। आसमान के नीले रंग से हल्का नीला रंग गुनगुनाते झरनों के किनारे उगी लम्बी घास का हरा रंग, बाँस और मधुमक्खी का पीला रंग, सागर पर छिटका सूर्यास्त का नारंगी रंग और गरमियों में जंगलों में फलने वाले बेरों का लाल रंग मिलाया। ये सतरंगी रूमाल फूलरानी ने सूरज को दे दिया। जल्दी ही सूरज का जुकाम ठीक होने लगा और सुबह सूरज फूलरानी का दिया सतरंगी रूमाल लेकर बाहर आया, शायद जरूरत पड़ जाए। रोशनी में रूमाल चमकने लगा। एक नन्हीं लड़की जो लगातार बारिश से ऊब गई थी बोली, "यह तो इन्द्रधनुष है, जिसने बरखा रानी को बाँध रखा है।" मगर हमारे लिए यह तो सूरज का सतरंगी रूमाल है।

समुद्र खारा क्यों

अभ्यास तेरहवें दिन

एक गाँव में दो भाई रहते थे। बड़ा भाई तो अमीर पर छोटा भाई बहुत गरीब था। छोटे भाई के परिवार को दोनों समय का खाना भी नसीब नहीं हो पाता था। कुछ दिन बाद दीवाली आई। लोगों के घरों में जैसे खुशियों की बहार आने लगी थी किन्तु छोटा भाई दुखी था। उसके पास परिवार को खिलाने के लिए अनाज भी नहीं था। वह अपने बड़े भाई के पास मदद माँगने गया, लेकिन उसने मदद नहीं की। वह निराश होकर अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक बूढ़ा आदमी मिला। उसके पास लकड़ी का गट्ठर था। बूढ़े ने कहा– ''तुम मेरी मदद करोगे? यह गट्ठर उठाकर मेरे घर तक पहुँचा दो तो मैं भी तुम्हारे कुछ काम आऊँगा।'' छोटे ने गट्ठर उठा लिया और बूढ़े के पीछे–पीछे उसके घर गया। बूढ़े ने बदले में एक मालपुआ दिया और कहा ''तुम जंगल की तरफ जाओ, वहाँ एक चट्टान के पास गुफा है। उस गुफा में तीन बौने रहते हैं वे मालपुओं के शौकीन हैं। उन्हें यह मालपुआ दे देना। वे तुम्हें ऐसी वस्तु देंगे जो तुम्हारी मदद करेगी।''

छोटा जंगल की तरफ बताए स्थान पर पहुँचा। गुफा के बाहर उसे तीन बौने दिखे, उसमें से एक बोला, ''यह मालपुआ मुझे दे दो।''

अभ्यास चौदहवें दिन

छोटे ने उसे मालपुआ दे दिया। बदले में उसने पत्थर की एक चक्की दी और कहा तुम्हें
जो भी चाहिए इससे माँग लेना। जब तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए तब इस चक्की पर लाल
कपड़ा डालकर ढ़क देना।'' छोटा चक्की लेकर घर पहुँचा। उसकी पत्नी और बच्चे भूखे
सो रहे थे। उसने कपड़ा बिछाया, चक्की रखी और कहा–''चक्की–चक्की चावल दे दो।''
चक्की ने चावल का ढ़ेर लगा दिया। छोटे ने चक्की को लाल कपड़े से ढ़क दिया। तब
चावल आने बन्द हो गए। उसने दुबारा कहा, ''चक्की–चक्की दाल दे दो'' कहते ही दाल
का ढ़ेर लग गया। उन्होंने जरूरत के अनुसार दाल–चावल बनाए, खाए और आराम से सो
गए। अगले दिन बाकी बचे दाल–चावल वह बाजार में जाकर बेच आया। इस प्रकार
रोज–रोज अनाज बेचकर वह बड़े भाई से भी अधिक धनवान बन गया।बड़े भाई को ईर्ष्या
हुई, उसने पता लगाने की ठानी कि छोटा अचानक अमीर कैसे बन गया? एक दिन जब
छोटा अनाज बेचने शहर गया, तब बड़ा भाई राज मालूम कर, चक्की को उठाकर अपने घ
र ले आया। फिर वह अपने परिवार को लेकर रातोंरात समुद्र के रास्ते दूर शहर के लिए
निकल गया। जहाज में बैठी उसकी पत्नी ने कहा, ''इस मामूली चक्की के लिए तुमने

अपना घर, सुख–सुविधाएँ सब छोड़ दी।'' बड़े भाई ने कहा, ''यह कोई मामूली चक्की नहीं है, अभी तुझे इसका चमत्कार दिखाता हूँ।'' उसने चक्की से कहा– ''चक्की–चक्की नमक दे दो।'' चक्की ने नमक का ढ़ेर लगा दिया, किन्तु चक्की बन्द करने के लिए लाल कपड़े का प्रयोग उसे नहीं आता था। नमक निकलता ही गया और ढ़ेर लगता गया। नमक के भार से जहाज चक्की समेत समुद्र में डूब गया। साथ में बड़ा भाई एवं उसका परिवार भी डूब गया। कहते हैं कि चक्की अभी भी चल रही है, नमक निकल रहा है इसलिए समुद्र का पानी खारा है।

छुटकी उल्ली

अभ्यास पन्द्रहवें दिन

जब छुटकी उल्ली दो साल की हुई, तो उसने सवाल पूछना शुरू किया। ''आसमान में कितने सितारे हैं?'' एक रात उसने अम्मी से पूछा।

''बहुत से,'' अम्मी ने जवाब दिया।

''कितने?'' छुटकी उल्ली ने आसमान की ओर देखते हुए पूछा।

अम्मी मुस्कराने लगी, ''तुम गिनकर देख लो।''

''एक, दो, तीन, चार...''

''एक सौ एक, एक सौ दो, एक सौ तीन, एक सौ चार...''

जब सूरज निकला, छुटकी तब भी गिन रही थी।

''एक हजार एक, एक हजार दो...''

''कितनें सितारे है आसमान में? अम्मी ने पूछा।

''इतने कि मैं गिन भी नहीं सकती,'' छुटकी ने पलकें झपकाते हुए कहा। फिर अपना सिर अपने पंखों में छिपाकर झट–से सो गई। अगली रात छुटकी ने फिर आसमान की ओर देखा।

''अम्मी, आसमान ऊँचा कित्ता है?''

''बहुत ऊँचा'' अम्मी बोली।

''कितना ऊँचा?'' छुटकी उल्ली ने फिर पूछा।

''जाकर खुद ही देख लो,'' अम्मी ने कहा।

तो फिर ऊपर आसमान की ओर उड़ चली। अपने पेड़ से बहुत ऊपर। बादलों तक जा पहुँची। उसने अपने पंख जोर से फड़फड़ाए। अब वह बादलों से भी ऊपर उड़ रही थी लेकिन वह जितना ऊपर जाती, आसमान और ऊपर उठता चला जाता। सुबह जब वह अपने पेड़ पर उतरी तो बहुत थक चुकी थी। ''तो कितना ऊँचा?'' ''इतना कि मैं उड़कर वहाँ पहुँच ही नहीं सकती,'' उल्ली ने जवाब दिया। फिर उसने अपनी आँखें बन्द की और सो गई। अगली रात छुटकी ने समुद्र में लहरों की आवाज सुनी।

नोट–

01. यह पुस्तिका केवल आपके अभ्यास के लिए है।

02. आप जरूरी नहीं कि एक दिन में केवल एक ही अभ्यास करें आप एक दिन में दो भी कर सकते हैं।

03. इस मैटर का बार–बार अभ्यास करें ताकि आपका प्रथम चरण शुद्ध हों एवं आगे एक–एक शब्द अच्छी तरह भलीभांति समझ आ सकें।

04. घर पर इन मैटरों को कम से कम 10 बार करके आप अभ्यास करें ताकि आपको कक्षा में मैटर बोलने पर लिखने में सुविधा हो